Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में पश्चिमी मध्यप्रदेश की जनजाति का योगदान

सुनिल चौहान*

* शोधार्थी, श्री कृष्णरावजी पंवार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवास (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन में जनजाति का अप्रतिम योगदान रहा है।पश्चिम मध्यप्रदेश के कई जनजाति योद्धा हुए जिन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध मोर्चा बनाकर विद्रोह किया जिसमें भीमा नायक, ख्वाजा नायक, टंट्या भील, सीताराम कुंवर आदि थे। इन जनजाति क्रांतिकारीयों ने अंग्रेजों के खिलाफ निरंतर सशस्त्र आंदोलन जारी रखा इस शोध पत्र के माध्यम से पश्चिम मध्यप्रदेश की भील जनजाति क्रांतिकारी योद्धाओं का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान का संक्षिप्त विश्लेषण किया गया।

प्रस्तावना – पश्चिमी मध्यप्रदेश का अधिकोश क्षेत्र पर्वतीय वनों से आच्छादित है। यहाँ पश्चिमी मालवा का पठार पश्चिमी नर्मदा घाटी निमाड़ और पश्चिमी सतपुड़ा श्रृंखला आती है।[1] पश्चिम मध्यप्रदेश का क्षेत्र वैज्ञानिक दृष्टि से आदिकाल में गोंडवाना लैंड का भूभाग था जिसके अंतर्गत बड़वानी, खरगोन खंडवा बुरहानपुर, रतलाम, धार, झाबुआ एवं अजीराजपुर इत्यादि जिला आते थे।[2]

जनजातियों के प्रारंभिक इतिहास के बारे में प्रमाणिक सामग्री का अभाव है। भील शब्द की उत्पत्ति संक्षिप्त भाषा में 'भिल्ल' शब्द से मानी जाती हैं।[3] भीलों की प्राचीन संस्कृत साहित्य, महाभारत, रामायण, बौद्ध कालीन एवं जैन साहित्य में चर्चा मिलती है। किसी समय इस जनजाति की अपनी एक स्वतंत्र सत्ता थी और मध्य भारत में भील सरदारों के कई छोटे–छोटे राज्य फैले हुए थे। प्राय भीलों का राजपूतों से संघर्ष होता रहता था। दसवीं शताब्दी तक चंपारण क्षेत्र के अतिरिक्त संपूर्ण रेवा कथा का क्षेत्र कोली एवं भीलों के अधीन था। किंतु 13वीं शताब्दी के आसपास यह संपूर्ण क्षेत्र राजपूतों के अधीन आ गया।

इसी कराण भीलों में स्थिारता नहीं आ पाई और वे विवश होकर लूटपाट करने लगे। यहां कार्य 1818 तक जारी रहा।

किंतु भीलों के इस कृत्य पर सर जॉन मालकॉम के काल में नियंत्रण किया गाया। इसके लिए इन्हें स्थायी रुप से बस्ती देकर बसाने के लिए प्रेरित किया गया एवं यहीं से इनके अंदर परिवर्तन आया और शांति से जीवन यापन करने की प्रवृत्ति विकसित हुई। सन 1818 ई के तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध में मराठा पराजय के उपरांत इनका क्षेत्र अंग्रेजों के हाथ में आ गया। ब्रिटिश सरकार ने अब नए सिरे से राजाओं एवं जमींदारों से अलग–अलग इकरारनामा किया। यह देशज राजा आदिवासियों को आदिवासी की दृष्टि से देखते थे। उनके मन में इनके लिए कभी आदर सम्मान की भावना नहीं थी। राजाओं के इस दोहरे चरित्र के कारण जनजाति जान भाषा धन सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति में पिछड़ते गए। इसी कारण कालांतर में यह स्थिति प्रतिकार के रुप में परिवर्तित हो गई।

जनजातीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति देशज राजाओं के दृष्टिकोण समझने के लिए इन्हें दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम भाग में वे राजा आते थे जो जनजातियों के हितेषी थे और उन्होंने स्वयं जनजातियां विद्रोह एवं आंदोलन का नेतृत्व किया तथा इसमें भाग ले रही जनजाति क्रांतिकारियों का यथाशक्ति सहयोग एवं संरक्षण भी दिया। उदाहरण के लिए बिरदा के टंट्या भील एवं बड़वानी के ढाबा बावड़ी के भीमा नायक के विद्रोही कार्य की जानकारी होलकर राजा एवं बड़वानी के राजा जसवंत सिंह को होने के बाद भी उन्हेंने अंग्रेजों को इनकी सूचना नहीं दी।

देशज राजा कालांतर में इतनी शक्ति संपन्न नहीं रह गए थे कि वह अकेले अंग्रेजों के विरुद्ध जा सके किंतु वह अंदर ही अंदर चाहते थे कि अंग्रेजों का संपूर्ण नाश हो। द्वितीय वर्ग में आने वाले देशज राजा अंग्रेजों के चमचे बने रहे और उन्होंने जनजातियों के शोषण एवं विद्रोह के दमन करने में ब्रिटिश सरकार का साथ दिया। उदाहरण के लिए सन 1831 में धार राज्य के भीलों के विद्रोह को दबाने के लिए धार के राजा ने आउट्रम से मदद मांगी थी।[4]

आउट्रम ने सूझ बूझ से काम लेते हुए पहले उन्हें अपना मित्र बनाया और राजा और प्रजा के बीच वह अपनी पैठ बनाने में सफल हो गया और उसने कांटे से काटा निकालने की युथत को आत्मसात करते हुए भीलों के विरुद्ध भीलों को खड़ा करने के लिए 'भील कोर' का गठन कर दिया।[5] प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के एक अन्य घटनाक्रम में नागपुर क्षेत्र के गोंड जमींदार बापुराव एवं वेंकट राव को पकड़ने में अहिरी के जमींदारों द्वारा अंग्रेजों की सहायता की गई थी।[6]

संपूर्ण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर नजर डालें तो स्पष्ट हो जाता है कि मध्य भारत में ऐसे कई जनजाति योद्धा थे जिन्होंने इस आजादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व झोंक दिया। इन आजादी के मतवाले क्रांतिकारी में से भीमा नायक, ख्वाजा नायक, सीताराम कुंवर, टंट्या भील, आदि क्रांतिकारी का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

भीमा नायक– स्वतंत्रता संग्राम में निमाड़ के भीलों को प्रेरित करने वाले

यहां क्रांतिकारी योद्धा भीमा नायक ना जन्म 1815 ई हुआ था। बाल्य काल में ही गोफन तीर कमान चलाने में माहिर था और उसे सशस्त्र ज्ञान उसके पिता रामा नायक ने सिखाया था। भीम का क्रांतिकारी बनने में परिवार के महत्वपूर्ण भूमिका रही है।अंग्रेजों की शोषणकारी एवं अत्याचार नीति से मुक्ति के लिए 1837 उन्होंने सैनिक टुकड़ी बनाई और 500 भील सैनिक तैयार किये।भीमा नायक ने 1840 से 1864 तब अंग्रेजों के विरुद्ध भीलों का नेतृत्व किया था। किंतु 2 अप्रैल 1867 का पुलिस ने उन्हें बंदी बना लिया जिससे उनके द्वारा संचालित क्रांतिकारी गतिविधियों समाप्त हो गई।[7]

ख्वाजा नायक–ख्वाजा नया के सेंधवा घाट के वार्डन गुमान नायक का पुत्र था पिता की मृत्यु के बाद ख्वाजा नायक को 1833 में सेंधवा घाट का वार्डन बनाया गया 1850 में तत्कालिक सरकार ने एक हत्या के अरब में 10वर्ष की सजा दी और 1856 में ही उसे रिहा कर दिया गया तथा ख्वाजा नायक को सेंधवा घाट के वार्डन की नौकरी वापस मिल गई ख्वाजा नायक नौकरी में रुचि ना रख कर स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी गतिविधियों को बढ़ावा दिया और 7 अक्टूबर 1857 को महादेव नायक देवरिया नायक अपने साथियों के साथ थोड़ा जनक सांगली आए और खान देश में सिरपुर को लूटने में खजाना के सॉन्ग का हाथ था लूटा हुआ सभी माल गरीबों में बताते थे गोवा जनक का दिल पर और भी लोगों को भी ख्वाजा में पर पूरा विश्वास था सिरपुर के 5 किलोमीटर क्षेत्र के आसपास के सभी दिन ख्वाजा नायक के संगठन से जुड़े थे।[8] 1857 का स्वतंत्रता समर समाप्त होने के बाद भी ख्वाजा नायक अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्षजारी रखा। ख्वाजा को पकड़ने के लिए षणयंत्र रचा गया सादे वेश में और बहुत दिन मकरानी जमादार को नौकरी की खोज में भेजा गया और कुरान एवं बैल की कसम लेकर वफादारी का वादा किया ख्वाजा नायक सूर्य की और मुंह करके खडे थे तब 6 अक्टूबर 1860 को रोज दिन में गोली मार दी थी ख्वाजा नायक एक जमीन पर गिर गए।[9]

सीताराम कुंवर–सीताराम कुंवर भिलाला जनजाति के क्रांतिकारी थे। बडवानी क्षेत्र से स्वतंत्रता आंदोलन की आवाज उठाई और भीमा नायक और ख्वाजा नायक पर जब–जब अंग्रेजों की दमनात्मक कार्रवाई हुई तब तब सीताराम कुंवर ने क्रांतिकारियों की कमान संभाले भील भीलालों को एकत्रित कर संगठन बनाया। बाल सुमंद चौकी पर 30 सितंबर 1858 को अधिकार कर लिया और जमुनी चौकी को आग का हवाला दे दिया, सीताराम कुंवर पर रुपये 500 का इनाम भी अंग्रेजों ने घोषित किया था। सीताराम कुंवर और ब्रिटिश सेना के बीच बडनामक स्थान पर युद्ध हुआ और युद्ध में हार हुई सीताराम कुंवर और हवलदार ज्वाला में मारे गए थे।[10]

टंट्या भील–खंडवा जिले के तहसील पांधना ग्राम बिरदा में सन् 1824 से 1827 के बीच जन्म हुआ। पिता का नाम भाउ सिंह और माता का नाम जीवनी थी। टुंडरा बचपन का नाम था। निशानेबाज घुड़सवारी गोफन चलाने में निपुर्ण था। पटेल द्वारा कर अधिक और अत्याचारी था गांव के आदिवासी पर जोर लुलुम करता था टंट्या भील के माता–पिता की हतया पटेल और उसके चमचो द्वारा की गई।

टंट्या भील पटेल का विरोध किया तो पटेल ने आदिवासी की बस्ती को जला दिया और शाही लोगों महिलाओं एवं बच्चों की रक्षा के लिए कसम खाई और बदला लेने की थाने तथा अंग्रेजों के सरकारी खजाना और जमींदार साहूकार और चमचो के धन को लूटना और गरीबों में जरूरतमंद को देते थे। गरीबों का मसीहा कहा जाता था इन्हीं वजह से अंग्रेज 'इंडियन रोबिन हुड' की उपाधि दी थी टंट्या भील के साथ 10 अगस्त 1889 गणपत ने विश्वासघात किया और एक योजना बुद्ध तरीके से पकड़ लिया गाया। टंट्या भील को धर्म ने कलाई में राखी नहीं बांधी बल्कि हथकड़िया बंधवाई 4 दिसंबर 1889 को रिटर्न टेबल का जबलपुर जेल में फांसी दे दी गई।[11]

निष्कर्ष– संपूर्ण आंदोलन के प्रत्येक विभाग एवं कालखंड पर नजर डालें तो स्पश्ट हो जाता हैकि मध्य भारत के पश्चिम में मध्यप्रदेश क्षेत्र के उन जनजातीय योद्धाओं की कमी नहीं है जिन्होंने इस स्वतंत्रता आंदोलन की लडाई में अपने प्राणों का उपसर्ग कर दिया परंतु युवा पीढी इन्हें विस्मृत कर बैठी यह शोध पत्र स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में स्थानीय स्तर पर की एक कडी के रुप में होगा जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास मूक एक अंतराल को पूरा करेगे। इन गुमनाम धूमिल पन्नों से चुन चुन कर इन वीर बलिदानी क्रांतिकारियों के योगदान को उजागर कर राज्य एवं राष्ट्र स्तर पर उपयोगी एवं प्रासंगिक बनाने का प्रयत्न किया गया हे

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. वर्मा डॉ. राजेंद्र, मध्यप्रदेश जिला गजेटियर, संचालनालय संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश, भोपाल 1994 पृ 02.
2. वही पृष्ठ क्र. 02.
3. वसंत, निर्गुण एवं गहलोत भानुशंकर, पिथौरा भाल जनजातीय चित्रांकन और मिथक कथाएं।
4. सिंह अयोध्या, भारत का मुक्ति संग्राम, दिल्ली 2001 पृ. क्र.163.
5. भगवान दास श्रीवास्तव 1857 के स्वाधीनता आंदोलन मे मध्यप्रदेश के आदिवासियों का योगदान पृ. क्र.11.
6. शुक्ला, डॉ. हीरालाल बस्तर का मुक्ति संग्राम, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृ. क्र.125.
7. लुनिया बी एन, मध्य भारत में विद्रोह, स्वराज संस्थान संचनालय, भोपाल, 2004 पृ. क्र.345–369.
8. राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली पॉलिटिकल सप्लीमेंट्री प्रोसिडिंग्स क्र.191–192 जुलाई 1867, पालिटिकल ए गवर्नर जनरल के एजेंट के प्रथम सहयोग ऐजेंट की ओर से भारत सरकार को संबंधित पत्र संख्या 35–161 दिनांक 20/07/1837.
9. सिमक खानदेश भील कोर ए. के. प्रिंगल का पत्र दिनांक 24/05/1841 पृ. क्र.252, 211.
10. तिवारी, श्रीराम, 1857 स्वतंत्रता संग्राम के रणबांकुरे स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल, 2008 पृष्ठ क्रमांक 38–39.
11. The superinentent of central jail Jabalpur I-506I Date 24/11/89/

****